विद्यापतिक काव्यक- विशिष्टता।

डॉ पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक

हृदय तथा मस्तिष्कक बिन्दुमे समन्वयक परिणत रूप काव्य कहल जाइत अछि। एहि काव्यक दू पक्ष मानल जाइत अछि — भाव-पक्ष आ कला-पक्ष। भावपक्षकेँ काव्यक आत्मा तथा कलापक्षकेँ ओकर अलंकरण मानल जाइत अछि। जाहि काव्यमे एहि दुनू पक्षक समावेश पाओल जाइछ तकरा श्रेष्ठ काव्यक कोटिमे गानल जाइछ आ ओहि मापदंड पर कविक मूल्यांकन सेहो कयल जाइत अछि।

कविकुल शिरोमणि ~~महाकवि~~ विद्यापति मैथिली काव्य-साहित्यमे सिद्धहस्त महाकविक रूपमे प्रसिद्ध छथि। हिनक काव्यमे हिनक काव्य भाव-पक्ष एवं कला-पक्षक सुन्दर समावेश भेल अछि। विद्यापति विशेषतः शृंगारिक कवि थिकाह। हिनक पदावलीमे आनो-आन रसक दृष्टिगत होइत अछि, किन्तु काव्यक मूल स्वर रस शृंगार अछि। ई शृंगारक दुनू पक्ष संयोग आ वियोगक विस्तृत वर्णन कयलनि, जे अत्यन्त मर्मस्पर्शी सिद्ध भेल।

कलापक्षक तात्पर्य अप्रस्तुत-विधान, अलंकार योजना आ भाषा ले अछि। काव्य

शास्त्रक पूर्णज्ञाता होयबाक कारणे हिनक काव्यमे कलापक्षक सम्पूर्ण शास्त्रीय वैशिष्ट्य अपन पूर्ण सौन्दर्यक संग विद्यमान छनि। तें हिनक कला पक्ष भावपक्षक बाधक नहि साधक सिद्ध भेल अछि। अतएव हिनक काव्य वैशिष्ट्यके निम्न लिखित रूपमे देखल जा सकैछ :-

अप्रस्तुत विधान → जाहिक वर्णन काव्यमे होइछ जे प्रस्तुत होइत अछि आ काव्य विषयके अधिक ग्राह्य बनयबाक लेल जे विधि-विधान होइछ से भेल अप्रस्तुत। अप्रस्तुतक २ भेद होइछ —

(i) जे लोकमे सम्भव अछि ओ वास्तविक अप्रस्तुत कहबैछ। एकर क्षेत्र उपमा थिक।

(ii) जाहिक लोकमे कोनो सत्ता नहि रहैछ से कल्पना अप्रस्तुत कहाओल जाइत अछि। एकर क्षेत्र उत्प्रेक्षा होइत अछि।

यथा →

अम्बर विघटु अकामिक कामिनि
कर कुच झाँपु सुछन्दा
कनक सम्भु सम अनुपम सुन्दर
दुइ पंकज दस चन्दा ॥

उपरोक्त पाँतिमे नायिकाक सुन्दर हाथ उपमा स्वर्णक शिवसँ देल गेल अछि

स्वर्ण प्रतिमा

लोकमे शिवक उपमा सम्भव थिक तैं वास्तविक अप्रस्तुत भेल।

(ii) जनिक लोकमे कोनो सत्ता नहि रहैछ से कल्पनाप्रसूत अप्रस्तुत कहबैछ।

यथा –

सुन्दरि वदन सिन्दुर बिन्दु सामर चिकुर भार।
जनि रवि ~~शशि~~ संगहि उगल पाछ कय अंधकार॥

एतय सौन्दर्य भावनाक वर्णन कयल गेल अछि। सुन्दरि मुख, ताहि पर सिन्दुरक ठोप आ चारूकात पसरल कारी मोटे केशराशि एहन प्रतीत होइत अछि जेना अंधकारकें पाछां छोड़ि कऽ चान आ सूर्य एकहि संग उगि आयल हो। सूर्य आ चन्द्रकें एकहि संग उगब लोकमे सम्भव नहि तैं कल्पना प्रसूत अप्रस्तुत थिक।

अलंकार योजना → शब्दालंकार शब्दगत चमत्कार उत्पन्न करैछ आ अर्थालंकार भावधाराकें गहन आ प्रभावोत्पादक बनबामे सहायक होइछ विद्यापतिक काव्यमे सुन्दर अलंकारक सफल प्रयोग भेल अछि। ~~किछु~~ पदावलीमे प्रयुक्त किछु उदाहरण देखल जा सकैत अछि –

अनुप्रास —

नन्दक नन्दन कदम्बक तरुतर,
धीरे-धीरे मुरली बजाव।
समय संकेत निकेतन बइसल,
बेरि-बेरि बोलि पठाव॥

यमक — सारंग नयन बयन पुनि सारंग
सारंग तसु समधाने।
सारंग उपर उगल दस सारंग
केलि करथि मधुपाने॥

विरोधाभास —
मोहि ऊपर दुई कमल फुलायल
नाल बिना रुचि पाई।
एकर अतिरिक्त अनेको अर्थालंकार
विद्यापति पदावलीमे पाओल जाइत अछि।

(ग) वाग्वैदग्ध्य आ उक्ति वैचित्र्य — विद्यापति
क काव्य शृंगारमे रसक अबाध धारक
संग-संग जग-जीवनक सुन्दरतम सत्यक
प्रकटीकरण सेहो भेल अछि। हिनक
काव्य वाग्विलास आ उक्ति वैचित्र्यसँ
ओत प्रोत अछि। दूती आ सखिक संभा-
षणमे एकर कतेको उदाहरण देखल
जा सकैछ। दूती अपन चातुर्यक बले
कृष्णाके राधाक अनुकूल तथा राधाके
कृष्णक अनुकूल बना दैत छथि जाहि

6

सम गुणसँ समन्वित अछि। हिनक भाषा
क सम्यक विश्लेषण करबाक पर निम्न
लिखित विशेषता। दृष्टिगोचर होइत
अछि —

(i) सफल भावाभिव्यक्ति —
भाषाक कर्म भावक अभिव्यक्ति करब
थिक। भाषाक लेल भावाभिव्यक्ति साध्य थिक
आ अलंकारादि साधन। विद्यापतिक भाषामे
एहि दुनूक भावक समन्वय थिक।
उदाहरण —

काक भाख निज भाखह रे,
पहु आओत मोरा
खीर खाँड भोजन देब रे,
भरि कनक कटोरा॥

(ii) चित्रमयता — सफल कवि शब्दक
पर भावक चित्र प्रस्तुत कऽ दैत छथि।
विद्यापतिक भाषा एहि गुणसँ समन्वित
अछि। उदाहरण —

चिकुर गरए जलधारा
जनि मुख ससि डर रोअए अँधारा।
कुच युग चारु चकेवा
निअ कुल मिलि आनि कोन देवा
ते संका भुजपासे
बाँधि धएल उड़ि जाएत अकासे।
उपरलिखित पंक्तिमे स्नाताक चित्र
अंकित कएल गेल अछि।

प्रकारेँ सखी राधाक मुँहसँ हुनक रीति-क्रियाक वर्णन करबा लैत छथि से साधारण काज नहि थिक। एकर एकटा उदाहरण लिखि अछि –

– धनिक आदर सब तहँ होय
निरधन बापुर पूछय न कोय।
– भनई विद्यापति भान रे
सुपुरुष न करो निदान रे।
– असमय आबि न दरय काम,
मन जन कर न विरस परिनाम।

विद्यापति एहि सम उक्तिक प्रकाशन शृंगार रसक माध्यमसँ कयलनि। कारणे ई उद्देश्य अथवा नीतिपरक चिंतनशील ओ नीरस पृष्ठभूमि बेसी मार्मिक आ प्रभावशाली बनि गेल अछि।

(घ) भाषा –

विद्यापतिक भाषा पर विद्वान लोकनिमे पर्याप्त मतभेद रहलनि अछि। कियो हिनका हिन्दीक कवि तकियो बंगला क कवि मानैत छथि। मुदा अनेक मैथिल विद्वान अपन अकाट्य मत ओ उदाहरण द्वारा हिनका मैथिल सिद्ध कयलनि।

विद्यापति पदावलीक भाषा, भाषाक

Scanned with CamScanner

(iii) अनुकरणात्मकता → शब्दक माध्यमे ध्वनि उत्पन्न करब अनुकरणात्मकता। ध्वनि कहबैछ। ई विशेषता महाकविक पांति सभमे भेटैत अछि। द्रष्टव्य थिक —

किंकिन किन किन
कंकन कन कन
घन घन नुपुर बाजे।

(iv) संगीतात्मकता → ई ता विद्यापतिक भाषाक प्राण थिक। ई संगीत सभ शास्त्रीय विधानसँ मुक्त हृदयक स्पन्दनकेँ स्वाभाविक गति प्रदान करैत अछि। पदावलीमे ई नृत्यमय स्पन्दन सर्वत्र छिड़ियाल अछि। यथा —

अखिल लोचन तम-ताप-विमोचन,
उदयाचि आनन्द कन्दे।
एक लोलित मुख मलिन कएलादि
इथी लागि मिदद चन्दे।

एहिमे कोनो सन्देह नहि जे विद्यापति काव्य काव्यगुणसँ भरल अछि। हिनक काव्यक कोकिल काकलि, ललित मधुमयता, कोमलकान्त पदावली भावुक हृदय विमोहिनी भावुकता आदि प्रतिभा देखि सामान्य जनमानसक चित्त मुग्ध भ' जाइत अछि ताहिमे कोनो अतिशयोक्ति नहि।